RAJHINDINEWS.COM

IA 2018: Candidates Typing Responce Sheet

Website → http://rajhindinews.com

सूचना सहायक भर्ती टंकण गति परीक्षा - 2018

Roll Number: xxxxxx Name of Candidate: | xxxxxx xxx Exam Date: 05/10/2018

Name of Venue: KINDLE INSTITUTE OF TECHNOLOGY4 Batch Time: 05:00 PM

Medium: HINDI

जुलाई 1989। बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। तीन तीन जबरदस्त हार्ट अटैक, एक के बाद एक। एक तो ऐसा कि जब्ज बंद, सांस बंद, घड़कन बंद। डॉक्टरों ने घोषित कर दिया कि अब प्राण नहीं रहे। पर डॉक्टर बोर्जेस ने फिर भी हिम्मत नीं हारी थी। उन्होंने नी सौ वॉल्ट्स के शॉक्स दिए। भयानक प्रयोग। लेकिन वे बोले कि यदि यह मृत शरीर मात्र है तो दर्द महसूस ही नहीं होगा, पर यदि कहीं भी जरा भी एक कण प्राण शेष होंगे तो हार्ट रिवाइव कर सकता है प्राण तो लौटे, पर इस प्रयोग में साठ प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। केवल चालीस प्रतिशत बचा। उसमें भी तीन अवरोध है। ओपन हार्ट ऑपरेशन की सोचेंगे। तब तक घर निकल बिना हिले डुले विश्राम करें। बहरहाल, ऐसी अर्ध्दमृत्यु की हालत में वापस घर लाया जाता हूं। मेरी जिद है कि बेडरूम में नहीं, मुझे अपने किताबों वाले कमरे में ही रखा जाए। वहीं लिटा दिया गया है मुझे। चलना, बोलना, पढ़ना मना। दिन भर पड़े पड़े दो ही चीजें देखता रहता हूं, बाई ओर की खिडकी के सामने रह रहक हवा में झूलते सुपारी के पेड के झालरदार पत्ते और अंदर कमरे में चारों ओर फर्श से लेकर छत तक उँची, किताबों से ठसाठस भरी अलमारियां। बचपन में परी कथाओं में जैसे पढ़ते थेि के राजा के प्राण उसके शरीर में नहीं, तोते में रहते हैं, वैसे ही लगता था कि मेरे प्राण इस शरीर से तो निकल चुके हैं, वे प्राण इन हजारों किताबों में बसे है जो पिछले चालीस पचास बरस में घीरे धीरे मेरे पास जमा होती गई है। कैसे जमा हुईं, संकलन की शुरुआत कैसे हुई, यह कथा बाद में सुनाउँगा। पहले तो चह बताना जरूरी है कि किताबों मं बसे है जो पिछले चालीस पचास बरस में घीरे धीरे मेरे पास जमा होती गई है। कैसे जमा हुईं, संकलन की शुरुआत कैसे हुई, यह कथा बाद में सुनाउँगा। पहले तो चह बताना जरूरी है कि किताबों मं बसे है जो पिछले चालीस पचास बरस में घीरे धीरे मेरे पास जमा होती गई है। कैसे जमा हुईं, संकलन की शुरुआत कैसे हुई, यह कथा बाद में सुनाउँगा। पहले तो चह बताना जरूरी शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला है खी। पिता की अच्छी खासी सरकारी नौकरी थी। पिता की अच्छी खासी सरकारी नौकरी थी। पत्ता हुई शि पास मेरे लिए बालसखा और चमचम। उनमें होती थी परियों, राजकुमारों, दानवों और सुंदरी राज की कहानियों और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाट लग गई। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते

Reporting Time: 17:15:46

rajhindinews.com

ચૂવના સરાવળ થવા ૮૦૦ન નાવ તકાલા - 2010

Roll Number: xxxxxx Name of Candidate: xxxxxx xxx

Name of Venue: KINDLE INSTITUTE OF TECHNOLOGY-I

Exam Date: 05/10/2018
Batch Time: 05:00 PM

Medium : ENGISH

The only woman in the world who has scaled Mt Everest twice wad born in a society where the birth of a son was regarded as a blessing, and a daughter though not j a curse, was not generally welcome. When her mother was k Santosh, a travelling holy man, gibig her his blessing, assumed thhat she wanted a son. But to everyones surprise, te unborn childs j who was standing close by, told him that they did not want a son. The holy man was also surprised j e gave the requested blessing and as destiny would have it, the blessig seemd to work. Santosh was born the sixth child in a family whith five sons, a sister to five brothers. She was born in the small village of Joniyawas of Rewari District in Haryana. The girl was given the name Santosh, whic means j But Santosh was not alwaya content with her place in a j way of life. She began living life on her own terms form the start. Where other girls wore trea Indian dresses. Looking back, she says now, form the very j I was quite d thhat if I chose a correct and a rational path, the others around me had to change, not me. Santosh parents wee affluent landowe who could afford to send their children to the best schools, even to the countrys capitial, New Delhi which was quite close by But in line with the k custom in the faimly, Santosh had to make do withh the local village school. So, she deicided to fight the system in her own quite way when the right moment arrived. And the right moment came when she turned sixteen. At sixteen, most of the girls in er village used to get married Santosh was also under pressure from her parents to do the same. A marriage as early as that was te last thing on her mind. She j her paents that she would never marry if shhe did not get a proper education. She left home and got herself enrolled in a school in Delhi. When her parents refused to pay for her education, she politely informed them of her plans to earn money by working part time to pay her school keen then agreed to pay for her education. Wishing always to study a vit more and with

Reporting Time: 17:35:15

Visit Website → Click here

THANKS

RAJHINDINEWS.COM